तिरेय अध्याय

उद्धव तथा विकास
तैल्कूत्त लघुकी का उद्देश्य तथा प्रयोग

तैल्कूत्त ताहिति में लघुकी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रमाण है क्योंकि आद्य के अत्यन्त ते विषय करने वाले शासित नाटक में लघुकी का महत्त्व अत्यन्त भी है। नाटक के लोकव्य देख रात्रि अत्यन्त रात्रि के लागत में निघना हो जाता है। अभ्यस्तता से तो लघुकी हो रात्रि लघुकी के उपाय से विशेष रात्रि के लागत में निघना हो जाता है। नाटक के ते लघुकी का भावयुक्त होना है। नाटक तो भैलोकय का भावयुक्त है। नाटक तो बैलोकय का भावयुक्त होना है। 

1. नाटक नाना प्रकार के मायके के समय तर रात्रि की उपस्थापना वाला लोकव्य का अनुक्रम है।

2. दृश्यार्थ, श्रमार्थ, श्रीराम तथा तपस्वी को यथार्थ अवस्था में विश्वास-प्रदायक है।

3. दृश्यावर्त, रात्रि तथा शृंपद्विखिन्य तो देश में उपस्थि करने वाला नाटक हो होता है। किसे इन लघुकी के उपनाट का हुई अवधि में निविदा नहीं करा बा सकता है।

3. तैल्कूत्त लघुकी का उद्देश्य -

तैल्कूत्त लघुकी का उपनाट का प्रसन्न अत्यन्त विचल है। इसके तमामार्थ तम प्राप्त भारतीय परम्परा, पारंपरिक विद्याव जैसे माता तथा भारत भूित तथा भारतीय प्रसन्नता कोगे।

---

1. नाटक: 1.107
2. कवि: 1.112
3. कवि: 1.114-115
भारतीय आर्थिक के अनुसार लगभग स्त्रियाँ की प्रतिष्ठा तथा कारकर्ता न्याय नियम हैं। 4 अर्थार्थ स्त्री के अनेक तरीक़े वैदिक तात्त्विक में प्राप्त भाषा में निरूपित की जाती है। 5 यद्यपि के अनेक कारणों के कारण यह न्याय नियम का उल्लोह तथा वृद्धिशोधक होता है। 6 यद्यपि के अनेक सुविधाएं नियमशील हैं जिनमें परिवर्तन व्याख्याताओं का परिलक्षण कथनीक वर्णित है। 7 वे सुविधाएं स्त्री का प्रतिष्ठा का परिलक्षण कथनीक वर्णित है। 8 स्त्री का अनेक रूप ले लेकि तथा लेखनवार्ता के भीतर गृहिणी प्रकरण में निरूपित किया गया है। 9 इत्यादि प्रकार के अनेक लेखनवार्ता के भी नाटकीय तत्त्व निरूपित हैं। प्रश्नसूत्र लेकर तथा जोलेनर्म बेडानल प्रकृति विद्याओं के केन्द्र में प्रकट है। इत्यादि प्रकार के केन्द्र जो आधार धारी भारतीय नाटककृति की उत्पत्ति के इतिहास में मानी गई है।

हा। स्त्री-नृत्य धार्मिकता तथा स्त्री-नृत्य ने केन्द्र रूपों में विकस हुए का सीवाद वृक्षों का अध्ययन करके पूर्वोत्तर विकासों के का से सहजता प्रकट की है। 10 पत्रकारों के नाटकीय तत्त्व प्राप्त रूप में निरूपित है। 11 उन समय के धर्मीय 12 अपनी, तर्किय संपादकों तथा दृष्टियों द्वारा नाटक का प्रतिष्ठा संस्कृत रूपों।

5. हा स्त्री-नृत्य आदर्श तथा स्त्री-नृत्य ने केन्द्र रूपों में विकस हुए का सीवाद वृक्षों का अध्ययन करके पूर्वोत्तर विकासों के का से सहजता प्रकट की है। 10 पत्रकारों के नाटकीय तत्त्व प्राप्त रूप में निरूपित है। 11 उन समय के धर्मीय 12 अपनी, तर्किय संपादकों तथा दृष्टियों द्वारा नाटक का प्रतिष्ठा संस्कृत रूपों।

4. हा स्त्री-नृत्य आदर्श तथा स्त्री-नृत्य ने केन्द्र रूपों में विकस हुए का सीवाद वृक्षों का अध्ययन करके पूर्वोत्तर विकासों के का से सहजता प्रकट की है। 10 पत्रकारों के नाटकीय तत्त्व प्राप्त रूप में निरूपित है। 11 उन समय के धर्मीय 12 अपनी, तर्किय संपादकों तथा दृष्टियों द्वारा नाटक का प्रतिष्ठा संस्कृत रूपों।

6. हा स्त्री-नृत्य आदर्श तथा स्त्री-नृत्य ने केन्द्र रूपों में विकस हुए का सीवाद वृक्षों का अध्ययन करके पूर्वोत्तर विकासों के का से सहजता प्रकट की है। 10 पत्रकारों के नाटकीय तत्त्व प्राप्त रूप में निरूपित है। 11 उन समय के धर्मीय 12 अपनी, तर्किय संपादकों तथा दृष्टियों द्वारा नाटक का प्रतिष्ठा संस्कृत रूपों।
में दुस्तरपत्रा तथा यथा अद्वय रूप संदर्भ पांडित दूरदर कम्पिया गया है। दुस्तरों की वासनियें तीर्थता में अर्थात् क्रिया पशुने आदिफार पर विपक्षों का किरार है तक वेदिक युग में श्रृंखला नामक जाति के लोग व्याख्यानिक रूप से नाटकों का आयोजन करते थे। इस प्रस्ताव के प्रति सवाल है कि यह के अवसरों पर सूत्र और गीतारों के माध्यम से कूट और श्रृंखला की नियुक्ति की वातकी थी। वे सूत्र एवं अभिव्यक्ति के संगीत से नाटकमन्त्र करते थे। स्टैंडार्ड दर्शनपक्ष उपलब्ध किया रहा अत्यधिक है।

उनके अनुसार वेदिक मौत में नाटक की तत्त्वावधि के प्रयोग के आधार पर यह अत्यधिक नहीं कहा जा सकता है कि वे सूत्र और श्रृंखला लोग नाटकमन्त्रों से पूर्ववत्ता अभिनय है। इतना ही नहीं केवल मनोरंजन के किसी भी प्रयोग में प्रत्येक आकार और नाटक संबंधी पारिशोधित शक्तिकला दृष्टिकोण नहीं देती। फिर भी यह तत्त्वावधि के नाटक की भावना के उत्सवों से उस नाटकमन्त्र का बोध न कोई तत्त्वावधि से हो सकता था। वह सूत्र अभिनय निष्ठानी नीति नहीं करता।

10. अध्यादेश में श्री नाटकीय कोर्स की व्याख्या दिया गया है।
तत्व विधान हैं।

वैदिक तीनों के उपरान्त ब्राह्मण ग्रन्थों में भी नाटकीय या कामचाल के दर्शन होते हैं। शतरंज ब्राह्मण में अनेक अंशों का काम है जिनमें से मूर्तिकथा तथा पूर्ववार उपक्रम का पुरातन प्रथु है। सततरंज ब्राह्मण में इन श्रृंखला की कथा विषय है। १२ उपनिषद वाद्यत्व में भी अनेक विश्लेषाणों तथा अवलोकनों के दर्शन होते हैं। कोपनिषद, गुडंगोपनिषद तथा श्रृंखलाकृत ग्रहण है। कोपनिषद में श्यामराग का काम करते हुए आया गया है कि आर्य राजी है तथा बलीर रघु है, बुध तारीख तथा बन बनाम है। १३

वैदिक तार्किक के बाद उत्तरार्द्ध तार्किक रामायण, भारतार्कार तथा अंदाज में भी नाटकीय तथा कामचाल के दर्शन समझला होता है। रामायण में वैद्य-नन्द का शास्त्र तथा वैदिक शास्त्र का उल्लेख अनेक प्रत्ययों में हृदा है। कात्यायी आलोचना के क्मानुसार शास्त्रांक अनुसार में नष्ट और नक्श प्रदेश नहीं किया गया है। १४ यह पर ही “व्यायम है” ऐसे नाटकों के लिए
प्रस्तुत किया गया था जिसमें रूपूक्त प्राकृत आदि भाषाओं का विषय रहता था ।
भरत जो दृष्टिक उसके मित्रों ने प्रतापनाथ जीयाप्रसन्न, नृसिंह तथा शाक्य प्रधान
कई नाटकों का आयोजन किया । रामायण के अवतारण का एक प्रणुक्त
काव्य जो तपोलकृत निदर्शन है ।

यज्ञार्थी थे शी नट, नर्तक, गायक तथा कुश्तार आदि का यज्ञ स्थल है । अहमुनि पारिशिष्ठ को कटक्यायाय थे पिकाली । वृक्षारोग द्वारा
रचित नट तूर्ण का यज्ञ स्थल है लेकिन नाटकाला विषयक गुप्त उपलब्ध नहीं होते हैं । अर्थशास्त्र के प्रकाश कौर्तिक्य ने शी वत्सल अंगारों की पिस्ता-दीङ्का के लिए
रूप जी की और ते प्रकृति करने के लिए कहते हैं कि दलील राज्य यथायथ के लिए
शिल्प, सहाय, अभीत्र तथा गायन आदि के लिए गाना, बाना, नाचना,
नाटक करना, दिना, पिकाली, निकाली दीङ्का-वेद्य-भूमि कराना, दूली का पिलत पकानना,
रढ़ीनाथ, भालाजो का गुंडा, पैर डालना तथा करीर सज्जा की जो वैचा प्रार
की अन्य है, शिल्प की यथायथ राज्य की और ते होने शास्त्र । अर्थशास्त्र
ते यह शी बात होता है कि यह समय नट, नर्तक, गायक, पादु, धन्यु, अधिवाक, फ्रेशर,
प्लेब, नालुक, चारण आदि को विनिश्चित एकत्रित कर लेना और नाटक करें
वीरिक्त अमर करती थीं । इन कथाओं के लिए राज्य में प्रशा अनुष्ठान पर प्रत्येक
नाटक के लिए पार्श्व पण्ड देखा-निदानित राज कर देना पड़ता था ।

<table>
<thead>
<tr>
<th>पृष्ठ</th>
<th>पृष्ठांक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>15</td>
<td>बांस</td>
</tr>
<tr>
<td>16</td>
<td>बगी</td>
</tr>
</tbody>
</table>
| 17 | भा निपाद श्रीकृष्ण चक्रायन: शास्त्री: तत् ।
यत्रांपश्च भिन्नार्दिश। अगमयिति । ।
-बांस | 2-2-15 |
| 18 | अनताः पं तथा त्येस नाटक नामकिलायन। ।
-भाग | 3-15-14 |
| 19 | पराराध्येऽक्षिण विषय भिन्नार्दिश। अभिषेक | ।
-भोज | 4-3-110 |
| 20 | कौन्ते वृक्षाचार्यम: ।
-भोज | 4-3-111 |
| 21 | मी मो वत पाल सिक्कियान नात्यकारी राजकमलालाबरी कहाँ। ।
-भाग | 2-27-28 पृष्ठ 82 |
| 22 | एतेन नट नर्तक..भृतादर्श दास। ।
-भाग | 3-27-25-26 पृष्ठ 82 |
फैसला अन्तर्गत विरोधित शहामांक में शी अर्थ और विलक्षण नामक दो नायकों को उल्लेख मिलता है। यदि पर केवल उनका नाम ही नहीं, अपने अर्थ का और भी स्पष्ट तौर पर लिखा गया है। इसलिए प्रतीत होता है कि परिवार के समय नत्संगीत सहकर संगीत और अभियान के द्वारा लोगों के सामने वे नायकों का कूल श्रद्धा करने लगे गये थे। अमृत के समापन आरंभ सार्वजनिक का कथन है कि तत्कालीन कलापूर्व लघुव्य भवनों में पाक या भोजन के प्रत्येक पर्वों पर राजा द्वारा नियुक्त नत्रों ने प्रस्तुत करते थे, जो उत्तर को उनकी भावना हमारे सामने रखते हैं। यह नायक बोल रहे हैं। यह विषय हमारी ग्रामीण परम्परा का दिवंगत करता है।

अब पानीपते दृष्टि से वाह्यन दिखा गया। पानीपते विरोधी में नायकों की उपवेशन के विषय में विचार करने वाले भ. रिहेन, पियोल, बुर्ता, कोनो प्रमुख हैं।

आगे रिहेन नामक पानीपते विरोधी नायक की उपवेशन का पूरा अर्थ दौर पूरा मानते हैं, उनके अनुसार समय समय पर नियंत्रण द्वारा पृथ्वी की सृष्टि में रखे जाने वाले समान प्रदर्शन से नायक का कथा हुआ। प्रत्येक और भारत में भूतवादों के प्रति समान प्रदर्शन करने की एक वैदिक ही प्रविध थी,

---------------------------------------------------------------------

23. इस तु कैसे क्षमानकालता--त्रिते यात्रावति व्रतिः क्षमानन्तीति, चिरहो देव पिरवीत च भो! अत्यं तुलता। कतरूं ये ताप्ये शोकिंचा: नामेन प्रत्याहारमी तात्रिति प्रत्याहार च भीति क्षमानन्तीति।
-महा ३० १० २६ १५, पृ ९६。
24. प्रथम मात्रक वा प्रायोजन तितर तत्त्व सत्ता सत्ता निर्तय सम्बन्धः दुलचनाचार्यानं नित्य: प्रेक्षानन्तः पृ ४।
-सु १० ४ २१, पृ ५४।
इसके उदाहरण रामचरित मात्मा तथा कृष्णलीला आदि हैं। भागी चित्रं गोदय ने इसका मानन करते हुए कहा है कि यह सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण नहीं है कि नाटकों के प्रदर्शन करने की क्षमता भारत में विभीषण के मन में पड़ी थी वास्तव में कभी विश्वास थी।

कथा विशेष पुरातत्व रूप से नाटक की उत्पत्ति अथवा आधार मानते हैं, उनका कथन है कि कपिल नायन में सौंदर्य नाटक का बोध है और उसका सन्तान स्तंभ भारत में बना है। इस विषय में फिल्म किंतु कीथ महोदय के पत्रों पर इस विषय और मायावत भारत वास्तव में कहा है किंतु वह मानना सर्वथा सीधार्थ गढ़ा कि नाटक इसी का परिशोध है।

कथा विशेष तथा कथा भोजन ने आया नाटकों के नाटकों को उत्पन्न करते नाटक का आधार माना है। कथा विशेष ने भी आयानाटकों को नाटक के विकास में एक आवश्यक तत्व माना था किंतु सम्पूर्ण संस्कृत वार्ता में केवल तुष्ट कीथ का नाटक कहने के द्वारा ही रखी गई है पैसिंक यह ना भी साध्य उत्पन्न नहीं है। कीथ महोदय के कर में आया नाटक प्रारंभिक नाटक की प्रमाण को प्रभावित कि नहीं कर रहा है।

क्षुद्र पारंपरिक पौराणिक नाटक ने मेलोड नृत्यों के आधार पर नाटकों की उत्पत्ति भारत में है, वह नृत्य परिशीलन। इसके अलावा इंग्लिश में पहले में क्षुद्र-धाम से व्यक्त भाव है। जो ने प्रथा और नई दिस्क के धार्मिक नृतांत को व्यंजना की है। भारत के इन्स्ट्रुमेंट ते इसकी त्यागता है। कीथ महोदय

25. पृष्ठी कीथ, संस्कृत नाटक, पृष्ठी 38
26. पृष्ठी, पृष्ठी 43-44
27. पृष्ठी, पृष्ठी 49
का अर्थ है कि विभिन्न समय नाटक शीत भुज की समाप्ति पर रखते हैं May-Pole परियोजना के आनुवंशिक या परस्पर बातों में यह धार्मिक और कृत्य कारण भूत की समाप्ति पर हुआ और यह आनुवंश बादलों पर, अनुभूतों पर, इनकी रचना के ध्यानवाद भावार्थ में बना गया। यह का अपने में अपनाया है परंतु नाटकों का पूर्वरूप यह तितल करने के लिए प्रयास है कि देखाया को अलालार्थ महत्त्व प्रदान ना जाता था। प्रामाणिक धार्मिक मानका का यह अवैय, याद नाटक का उद्देश्य ध्यानसेह को होता तो किसू अल्मेत होता।

कुछ पिशाचत तेलिक नाटकों की उल्लेख के लिए ग्रीक-युनान का प्रभाव माना है इमें देख पिशाच प्रमुख पिशाच प्रभाव है। तर्कका पेयर ने लिखा किया था तक नाटक नियमों की आगाज प्रशान्त अपने तात युनानी तेलिकों के साथ ही युनानी संस्कृति के समान वांटुलिया, परम्परा और मुद्दात के राजनीतिक और उन्नतियों के फलस्वरूप भारत में नाटक-रचना का आरम्भ हुआ किसी फायदा में भारतीय नाटक के ताल के और अन्य रचनार करते सब हमें हुआ अरोर करता या और तेलिका के यह अर भविष्य करता किन संस्कूल नाटक पर ग्रीक नाटक का कुछ न कुछ प्रभाव पड़ा है।

पिशाच का काल है कि न्यू ऐटिक कामेकι Attic comedy की, जिसमें उत्कर्ष काल 340-260 ईपू है, भारतीय नाटक पर प्रभाव का बोत माना गया इतिहास के अनुसार न्यू कामेकियों और तेलिक नाटक के बीच संयंत्रक के वांशिक तथा अल्य रूप है। रोमन और तेलिकी तो नाताल प्रार के नाटकों

28. ए॰बी॰ कीब, तेलिक नाटक, पृ॰ 32-33
29. कीब, पृ॰ 49-50

543006
का उंगों में पिथाजनः रंगकेस ते सभी अभिनेताओं के प्रश्नान दारा अंक लम्पित की तुलना और पाँच उंगों की प्रतापान्य स्मृत्ति क्रमशः भारतीय नाटकों में ज्ञात अंक भी मिलते हैं। तथा दूर्दय अंक नहीं प्राप्त हुए हैं।

प्रथम नाटक का पिथाजन कार्य के विशेष्य पर अभिविष्ट है जो यूनान या रोम में अभियोजक नहीं है।

प्रथम नाटक का आधार पर भारतीय नाटकों पर यूनानी प्रशासन मानते हैं। व्यवहार ब्रह्म का प्रयोग भारतीय रंगकेस में तेष्यवास ने गर्दने पाली पटी किए। ह्यूना तन्मय है। पहले के अन्त में शुरू होने पाली व्यवहार ब्रह्म की पूर्ववर्तित बुध धातु में है। अतः आभाय व्यवहारी भी है। लेकिन ने की मात्र आप अपनी ध्यान या आयुर्वेद रंगकेस की पटी के लिए व्यवहार ब्रह्म का प्रयोग 

वास्तव में परिवर्तक पिथानों के भारत की प्रतीच वस्तु का यूरोपीय उद्देश्य रही करने में यह आनंद का अनुभव होता था। और उनमें दारा प्राप्त दृष्टि के गोकुल करने पाले भारतीयों की उन्हें अनुभव के परे। स्वतंत्र ध्यान करने में अतूल के अस्मान का साक्षात्कार होता है, जो वास्तव विश्वविद्यालय ऐसी दर्शन रूपक को अपनाने में वे अतीय मौर्य का अनुभव करते हैं।

30. सौंपी कीथ, लक्ष्मण नाटक, पृ. 53
31. बख्ती, पृ. 54
32. सरग्रह भक्ति, लक्ष्मण नाट्य कृत, पृ. 13
स्कूल नाटकों को उपयोग के लिए मरत्वुलि का का अधिकांश चिह्नित किया जा सकता है। शर्तमतुलि के कथानुसार अधि शुम्बुलि के मनु शेवलुलि शुम्बुलि में इन्हें आदि देखकर नाटकों के तालिकारिक मुद्राओं की अनुसूची खिंचावी देखकर प्रश्नात्मक आशा के पात्र वार्ता देखकर नाटकों की प्रारंभिक की हिस्से के बदल हिस्से के अनुसार तण्डुला के लोग लाभ हो रहे हैं। 33 आदि ने उनके अनुरोध जो लोक कर लेने लोगों के अनुसार दर्शकों के दर्शकों का ध्यान कर बदल हें नाटक-नाटक, नाटक के खेल, यहुई में अभिसरण और 
अतिक के रूप में रतन को खेल हिता तथा परीक्षन नाटक का ध्यान बिखा। 35

देखकर नाटकों के नाटकाधिकृत में भुकाल होते हैं। इन्जुलाई ने नाटक का ध्यान कर अपने पुत्र को अभ्यास प्रद्योग को खिड़की की तथा भरत्वुलि ने भारती नाटक की आरंभिक और क्रूरता-वृत्तता का आरंभ के बाद नाटक का प्रथम बिखा। क्रूरता की वृत्तता में नाटक पहुँच तथा प्रथम विचार बिखा। इनकी वृत्तता के नाटक को अभिसरण कर प्रथम बिखा उन्हें भरत्वुलि को दिखा। तपस्यापातू। इन्जुला मे साध्यमुखार अधिकांश हेंद्र के व्यक्तित्व में इस नाटक का प्रथम बिखा। इतने प्रधान में देखकर की प्रथम बिखा तथा 
देखकर की प्रथम बिखा देखते होते ने उत्पाद बिखा। उन्हें शान्त बनने हेंद्र 
इन्जुला ने कहा कि यह नाटक के देखते देखते देखते होते हैं। के लिए देखते, इनमें परम्परा, जानकारी, नाटक और उपचार को खिस्म है। 37 ऐसा कोई जान, खिस्म, किका

33. नाओ-शा 108-12
34. अधि पात्रयुग में इन्जुलाई नाटक-नाटक, नाटक के खेल, यहुई में अभिसरण और 
अतिक के रूप में रतन को खेल हिता तथा परीक्षन नाटक का ध्यान बिखा। 35
35. नाओ-शा 1016
36. यहुई, 1053-55
37. यहुई, 10108
क्या, योग और कर्म नहीं हैं जो नाट्य में न हो। इसका केवल पर
देखा जानता हो जो क्योंकि नाट्य में तो देवों तथा देवताओं में वह रिक्ष्या की भी
विज्ञ और पराक्रम हो सकता है। इत्यादि नाटक निर्देशन होने हुए।
पहले आज्ञात करते हुए इसका अवलोकन नामक समकाली तथा दूसरा विनुष्ठान
नामक रिमझिम था।

उपरोक्त कम्य के प्रतीत होता है कि भारतीय स्थान, नाट्य को केव
ले आरक्षित भानते हैं। उद्धरण के सम्बन्ध मुक्ती में भारतीय नाटककला का
आरम्भ बन सकता है जिसका देखा देता है, यदि नाट्यकला धीरे-धीरे विकसित
हुई। क्या हमारा जीवन के बात है कि प्राचीन युग की नाटकरणधारा सम्पूर्णता नहीं
होती है जो प्राचीनतम रचनार्थक भाषा के नाटकपुस्तिकों में प्राप्त हुई है, वे
नाट्यकला के समूह और विकसित लव की वित्तियाँ हैं। उनके वर्णन है भाषा के
कई भागों पूर्व नाट्यकला के विकास के आरम्भ का पता चलता है। आत
स्थान भी कहा जा सकता है कि भारतीय नाट्यविद्वान गुण लव के भारतीय
है तथा हमके आर विक्ष भी प्रकार आ फिरेंगी प्रभाव नहीं है।

8. संस्कृत व्यक्ति का विकास -

भारत में संस्कृत नाटकों के पूर्व विकास में कई स्थानिक बोध हैं,
तथा उनकी उत्पत्ति न अस्थायी में केवल उपदानों का प्रमाण हुआ। संस्कृत
नाटककारों का विश्वसन प्रतिष्ठा प्रत्युक्त विश्व जा रहा है। हम यहाँ नाटककारों
के कालक्रम का तुलनात्मक अनुमान नहीं कर सकते हैं कि कौन नाटककार पहले हुआ

39. नाट-शा. 10.16
39. नाट-शा. 4.2-3
40. नाट-शा. 4.10
तथा मौन बाद में हमारे अधिकार किलानों के मायों को किया है क्योंकि फिरान भी सभी नाटकारों के किया में तपस्या दृष्टिकोण नहीं रखिया हैं तथा यह हमारे अन्ययन आ किया भी नहीं है ।

10 शूरु नाटकार -

तस्कूल साहित्य के इतिहास में शूरु नाटकारों में गात, शृंखल, रलिवार, अनुग्रह, निलस्कृद्द, मद्दति वार के नाम उल्लेखनीय हैं ।

गात -

तस्कूल साहित्य के इतिहास में भात अधिकारी नाटकार हैं । फरार नाटकारों तथा असामाजिक ने कहीं आदर लीता उनका तथा उनकी वृत्तियों के उद्देश्य अंशों का नामित संशोधन लिया है । भात के नाटकों के उपलब्ध होने से पूर्व शृंखल या रलिवार को प्रथम नाटकार भारत नाटक रहा है । 1910 ई. तक यूरोप में भात के दस्टी नाटक का अंशित अभियान था । 1912 में बांक तेरह नाटकों की भारत का पहला नाटक टी. ममता शाली के तथ्यात्मक में प्रभावित हुआ । उन्होंने उसका प्रथम कविता बातों को दिया । तथ्याति, तेलव के किया में वे नाटक जब मौन हैं ।

भात के स्थिरता बाद के किया में पित्र महां संभव नहीं है । शृंखल किलानों के अन्वेष में ई-पू. शृंखल वा पूर्व शक्ताबदी के हैं तथा अन्य पित्र के इसा प्रचार में तीसरे शताबदी में मानते हैं । रेता इतिहास हुआ है कि असामाजिक ने नाटकर तक जब उनका असामाजिक नामोलेख करते हैं । भात के उपलब्ध प्रतिक

41 पौ-सी. किव, तस्कूल नाटक, पृ-84
बत्त के लेख को प्रायोत्तिक रचनाओं के लिख में भी विवरणों को
लग्दे है, लेकिन ए-वी- कृष्ण कहानी के अनुसार - सम्भव लघू ते वे लघू ही सब
महान संस्कृतियों को वृक्षित है ग्रंथिय में वे आदिदास के नाटकों की अवस्था क्या
परिशुद्ध है उनकी प्राकृत आवाजिद से रचनाओं वा श्रृंखलात्त की प्राकृत की
अवस्था लघू लघू ते पूर्वकालिक है। 43

बत्त के लेख नाटकों का आधार निर्माण किया और
तक्त है।

रामायण पर आधारित — प्रतिमा नाटक और अर्थात = 2
कृष्ण लघू ते संबंध = 2
महाभारत पर आधारित — भाषण व्यायाम, दुतवाक्य,
दूत घटोरका, अर्थात, उस
भंग तथा धारणा = 5
उदयन अवहित — प्रतिवायचोलन राजशंकर और
tप्रश्नपाठशाला = 2
त्रिमूल्यावहित या स्त्रियामूलक वा संस्थान तथा अविराम = 2

42. प्रक्षेत्रकार्या मानकों पुनरुक्षिप्तकारों जॅक्क्हान नार्त्तिक्यः...
    .....कई वरिष्ठों अभ्यासः। — मी-अ पृ-5
43. ए-वी- कृष्ण, तस्कुत नाटक, पृ-८५
प्रतिवा नाटक -

तात अंगों वाले इस नाटक में राम के प्रवास से केवल उनके राज्यार्थियों
परम्परा की ओर विश्वास है। नंदवत ने पापित गाते हुए बताते हैं कि दिवंगत पूर्वकों
की प्रतिव्यावहारियों के अंक से अपने पिता द्वारक की मृत्यु का भाषा है का जान हो जाता है। इसमें
पापित लोधियों का व्यक्ति विद्यमान है। नायक राम तथा नायिका तीत्ता हैं,
दार्पण, भर, लक्ष्मण, दुर्गा तथा राक्षस आदिपुरुष तथा बोधि, कैक्ति आदि लोक पात्र हैं। नाटक में अंगी रत कल्व है। शूकार तथा दार्शन भी अंगकर में
विन्यास है।

उपन्यास नाटक -

इस नाटक में हैं ये अंग, जिल्लों छन्दीय तथा राम दोनों का राज्यार्थियों
की होता है। इसमें पापित लोधियों विद्यमान है। नायक राम तथा नायिका तीत्ता हैं,
कलिया, छन्दीय, दुर्गास आदि काल्प पात्र हैं। शूक रत पीर है, कल्व, भानुक,
अद्दूकत तथा वार्तालाप आदि गोष रत है।

बालवृत्त -

इस नाटक की अभावतुल का भूल ग्रंथ रामदासु का हरिकित का उपासना, भागाभाग
का दौरों तथा गुरुणों में एकक श्रीकृष्ण का दौरान है। पापित अंगों वाले इस
नाटक में श्रीकृष्ण के कथा से केवल केवल की कथा विनिमय है। नाटक में
पापित लोधियों हैं। नायक कृष्ण तथा प्रतिनायक कस्तू है। अंगी रत पीर है तथा
आदित्य, दात्म आदि गोष रत है। शूकार का अभाव है जिसका परदाएँ परम्परा
में कृष्ण के साथ घिरि समय रहा है, उसी पूरा राया का पिता भी नहीं पाया जाता।

मथ्यम व्यायोग -

मथ्यम व्यायोग महाभारत पर आधारित मात्र अ मत्र के छोटा एक नाटक है तथा व्यायोग है। इस मथ्यम पाठ्य भीम द्वारा राक्षस घटोत्रक्ष के पाठ से आक्षण पृथ्वी की रक्षा, भीम के पुजारी से आनन्दानुज्जैत तथा विक्रम के मिलन होने की क्षा वार्षिक है। गर्भ व रोमांचकीङ्ग का अभाव है। नायक भीम है। एक रत वीर है तथा भक्ति, रोट अभिद रायों का भी वर्ण है।

दूतवाक्य -

दूतवाक्य भी एक नाटक है। इसमें भ्रीकृष्ण का पाण्डव पक्ष की ओर से दूतोत्रक्ष के दक्षता सिद्धांत को लेकर आने तथा वहीं अपनाई गई। दूतवाक्य के प्रभाव की क्षा वर्षिक है। गर्भ तथा रोमांचकीङ्ग का अभाव है। नायक भ्रीकृष्ण है, दूरोधि, भीम आदि अन्य पात है। मुख्य रत वीर है।

दूत घटोत्रक्ष -

दूत घटोत्रक्ष की क्षा वस्तु महाभारत के रूप है। एक बार वासे यह नाटक में भ्रीमिक्यों की ध्वनि के प्रभाव भ्रीकृष्ण घटोत्रक्ष को दूतवाक्य में दूरोधि के पात बलियों है। दूरोधि के साथ अनन्द जौरव के विक्रम के द्वारा उनके दम की भव्यवाणी करता है। इसमें केवल मुख्यत्व तथा निर्धारण सिद्ध है। नायक घटोत्रक्ष है, दूरोधि, दूरोधि, दूरोधि का

-------------------------------------
440 ए-वी- कीथ, तैलंकूट नाटक, पृ-74
गान्धारी आदि अन्य पात्र है। मुख्य रत वीर है तथा क्रम गोष्ट रत है।

कर्मवार -

कर्मवार सवारी कुपक है। इसमें इलाक्षित की मूल्य के प्रपात, औरवा की ओर से क्रम को सेवापूर्वक नियुक्त करने तथा क्रम की आदमी पेश्यारी उन्नति को शक्ति राज के पता करने पर भी कुछ तोहत क्रम देने की क्रम वापस है। इसमें केवल मुख तथा निर्धार दो ही तीनिध्या हैं। नायक क्रम है, काल्पराज, काल्पनिक तथा आदमीकेश्वरी उन्नत अन्य पात्र हैं। मुख्य रत वीर है तथा क्रम का भी कर्म समर्पण लटोता है।

उस भौग -

उसी समय सवारी नाटक है तथा शीतल शाहिद्य में एकांत दुःखान्त नाटक है। इसमें औरवा तथा पाण्डवों का अंतम लेफ्ट, भवयोग के अपमान का बुला लेने में भी भीम भार द्वारा दुःखम ही कर्म का भी भेंग करन गानने का पूर्ण है। मुख तथा निर्धारे नामक दो सीविधां वर्त्ता हैं। नायक भीम हैं। क्रम और द्वार, द्वार, काल्पनिक अदि अन्य पात्र हैं। एम्बी रत वीर है और इसके अन्तर्निक क्रम, शान्ति तथा रोड का भी सीमाधृष्ट हुआ है।

पैरारात -

पैरारात तीन एंगों का समर्पण है। जिसमें महाभारत पर आधारित क्रांति के और ने नाटकीय दृश्यों का प्रत्येक करने में प्रशासनिक विश्वास की है। द्वार, द्वार, द्वार, काल्पनिक अदि आदि राज्य देने के लिए उपलब्ध हो जाता है। योध ने प्रत्य पाण्डव के अन्दर राम जानें। द्वार के
प्रयत्नों के पाण्डवों के मित्र जाने पर प्रतिभागुण्ड्रोधन पाण्डवों को आया राज्य दे देता है। इसमें पार्वती लोकस्थाई का पर्याय है। नायक दुर्योधन है तथा 
भीष्म, द्रौपदि, राजा विष्णु और अन्यवेशधारी वाणिज्य अन्य पात्र है। ऐसी रस 
वीर है, दाह तथा पातलाल्य रस अंकों में है।

प्रतिभायोगधरान्य -

मुन्याद्य की मूर्तिका पर आधारित प्रतिभायोगधरान्य स्थान में वस्त्राराज 
उदयन तथा वातस्मतता की प्रेमक्षा वीर्य है। योगन्धराजन प्रतिभायक होकर 
अपनी कुटी के उदय के करंटमृत्त के हुकूमे तथा वातस्मतता के परिणाम 
करने में सफल हो जाता है। वह स्थान प्रफुल्ल की श्रेष्ठी में आता है। इसी 
पार अंक है, पार्वती लोकस्थाई वीर्य है। गुरु यथा के अन्तर्गत प्रेमक्षा तथा 
विष्णुकृत की भी योजना की गई है। नायक योगन्धराजन धीर प्राप्त है, जसे 
अतिरिक्त उदयन, महारेण, ताबक आर्द्र सहायक पात्र है। वैष्णवों में वातस्मतता 
गुण है। मुख्य रस वीर है तथा दुराल अर्नत आर्द्र गोष्ट रस है।

स्वप्नवास्तवतम -

तत्काल साहित्य में कथापूर्व से संगीत संगीत की दृष्टि से भारत- 
पुरीत स्वप्नवास्तवतम, अवधारी कृत है। वह प्रतिभायोगन्धराजन का उल्लंघन 
है। इसमें मन्त्री योगन्धराजन वातस्मतता को राज्य से यथार्थ का पदार्पण के 
समय कथा देते हैं और "वह जो बढ़ी" ऐसा प्रबोधित करते हैं। इस प्रवाद को 
विश्वास कर उदयन का पदार्पण के तिल्ला रस में रहते राज्य का अर्ण रूप्य नहीं है। 
स्वप्नवास्तवतम के 4: अंक है तथा इसमें पार्वती लोकस्थाई 
का भूनिर नियोजन हुआ है। स्वप्न ज्ञात के अन्तर्गत प्रेमक्ष तथा वीर
विक्रमको नायक दुर्गा है। नायक उदयन धीरजित जोट्ट के है। नायक वाल्मीकि त्योहार थाकी कोट की है। लोग योग्यतात्मक वस्तुक आदि पूर्व मात्र तथा पद्मावती तापली आदि ली पात्र है। नाटक का प्रधान रत शुभागर है, जिले नैमों तथा पिवलम दोनों में का मनोहारी पितार किया है। अश्व, हाथ तथा दीर्घ आदि रत मोह रत है।

पास्तर्त -

पास्तर्त नाटक की कथासु अथार अधिकारनापूर्वक है। इतने निर्धारित किन्द्र उदगर धार्मिक पास्तर्त तथा गीतावलोकन पलमतामा की कथा सोहत है। यह प्रक्रम अपूर्ण है। इसमें धार और तथा धार तीन धाराएँ है। तेजता निर्धारित तीन धार का उपयोग का हो हुआ है। नायक पास्तर्त है, नायक वशस्वर तथा प्रतिनायक शक्ति है। इसी उत्तरास्त सिद्धांत, समय तथा पद्मावत आदि स्वायत्त पात्रों का कर्म समुज्ज्वल होता है। मुख्य रत शुभागर है, हाथ तथा क्षण रत का भी व्यापक प्रयोग हुआ है।

अधिकारक -

अधिकारक नामक नाटक भी लोकायों पर आधारित है। इसमें महाराज कुंती भोज की कुली भूलती और अधिकारक नामक राजशुभागर की ध्रुवणा वृत्त है। नाटक में हृत श: और नायक नैमों का कुंदर दृश्यक है। नायक अधिकारक है और नायक नैमों है। अन्य पात्रों में राजा भूमि नैमों का धाराधारी इतरादित है। मुख्य रत शुभागर है और दीर्घ, हाथ, शान्त, क्षण आदि गोष्ट रत है।
शुद्ध -

शुद्ध विवृति शृणुकोटिक संस्कृत लोगों में स्थित लगा है। शृणुकोटिक भाषा गणित बास्तव अथवा पूर्ण लय है। क्योंकि भुज लयों के नाम प्रर्थित रखी गई है। वेदांत में तो भुज लयों यह लय में उद्ध श्रवण उद्ध का प्रवीण रूप है। शृणुकोटिक क्षेत्र भावनाओं और वास्तविकता तथा अंतर्गत एक झेला लय का हो चोरों, शुद्ध लयों, राम्राजिक भूर्म-ज्ञातियों, छोटाओं और सामान्य-णिकायों का सेवार रूप लेते हुए हैं।

क्षुद्र विषयों ने शुद्ध को एक अल्पपाया मनोरम गाता है। अनेक इस तरह से श्रृंखला का आधार शृणुकोटिक की प्रस्तावना में गौरवित होते हैं। अतः शुद्ध ने अपने आप के विषय पर राजा के लय में लघु रूप रखा है। यह सार रूप विधा है कि वह अपना पुत्र को राज्याभिषेक करने प्रस्ताव लेता है। वस्तु लय में प्रशंसक हुआ। किन्तु प्रशंसक का वह में निष्क्रिय प्रतीत होता है।

शृणुकोटिक के रचनागळ की भावना उसका अमल निर्देशित भी वर्तमान नहीं रहता है।

सारी की बार संदेह के अनुसार - त्य केवल भुज धारणाओं नहीं रखते हैं जो उस भुजाल अलक के अल्प निर्देशित के अनुसार अभ्यासित हैं जिसे राजस्व को कुछ लय और भारतीय नाट्य साहित्य के एक रूपांतर लय का निर्माण दिया। नटलाल ने वर्तमान राजकीय तथा सामाजिक वर्तमान रूप अधिक रूप से अपत्ति प्राप्त अथवा अनुसार तन्त्र का विशेष रूप शोधन करता है स्थानिक को विवेक के साथ विवेक देता जैसे।

45. मोतिकी, कद सलाल, कृष्णप्रभाकर इत्यादि श्रावण, पृ. 228
46. पृ. 1045
47. पृ. 128
लक्ष्य तमाच का दर्शन इस लघु में न होना उसे आविष्कार के पूर्व ही लिख करता है। आविष्कार का लक्ष्य इ-पूर्व प्रभु नहीं मानने तथा शुद्ध रूपस्वरूप उन्हें पूर्वकर्ताओं के आँक़ का लक्ष्य इ-पूर्व तृतीय या पितृदिव्य शास्त्री माना जा सकता है।

शुद्ध प्रभुमत सृष्टिकृत एवं उद्देश्य का एक प्रकार है। ये ऋषि भी अपने दृष्टियों में विभक्त हैं। लघु की अायालु पात्रता तथा भक्तिभक्ति की प्रणाली के प्रसारित हेतु दर्शन तथा क्षेत्र प्रसारण इस प्रकार है - उन्होंने की प्रतिष्ठा वारस्मत्व भक्तिभक्ति के निर्माण आभूषण वृद्धधार पात्रता पर आरक्ष है। राजस्वाला शात्र भी उसे प्रभु मिलाते हेतु लालचल्लय है। यह अच्छी रात में शात्र तथा उसके साथ ही पीने का एक घर देते होते हैं। कर पात्रता के पर प्रकाश कर अपने आभूषण स्नात के लघु में रखते है। विशेषकर यह अपने प्रभुभक्ति भक्तिभक्ति की आदि गरीबों को दान भाव से मुक्त आवाज़े हेतु पात्रता के पर सेवा लगाते आभूषणों को घुँटा देते हैं तथा गरीबों स्वतंत्र ही कर उपस्थूल का बाधा है। पात्रता की प्रतिभा का दृष्टि उन आभूषणों के अद्वैत रात्रियों भक्तिभक्ति को भरती है। पात्रता का पूरा प्रभुमत मिद्दत की गाढ़ी है और उसी देशा साधनता, तद्भव भक्तिभक्ति स्वरुपालोगाव कराते हेतु अपने आभूषण मिद्दत की गाढ़ी में रख देते हैं।

पात्रता पूर्ण-अनुप्रकाश उपन्यास में भक्तिभक्ति के आगमन की प्रतीक्षा करता है। किसी भक्तिभक्ति भक्तिभक्ति की गाढ़ी के स्नात पर तीर्थदर्शन शातों की गाढ़ी पर घट जाते हैं। अर्थ एकता किंवा की भोजनावाणी के अनुसार गोपाल-पूर्ण आर्य राजा पात्र का बनना आरक्ष है। भक्तिभक्ति की गाढ़ी पर घट जाता है तथा राहते में गाढ़ी निरोध न के लघु की भक्तिभक्ति में के एक धर्मन के अभयारण प्रभु का पात्रता के पात्र पहुँच जाता है तथा खाते से भी गाढ़ी हो जाता है। भक्तिभक्ति पूर्ण-अनुप्रकाश उपन्यास में पहुँच का पात्रता के स्नात पर नूतन शातों की पात्रता है और उसके निर्वाण प्रभु प्रतिकार का उत्पादक कर देते हैं। इससे किंवा की यह शातों अने लालचालों विज इत्यादि का आत्मवृक्ष या हेतु का
पतन्त्रेन्या का ग्राम घोट देता है। यह लेखक नाम ब्राह्मण के उपरेत्त होकर पूर्वार्द्धों के वार होता है। श्रावण के नवावर्ष में बाहर वास्त्रात्त पर पतन्त्रेन्या के हत्या करने का आरोप लगाने से पास्त्रात्त को मृत्युदण्ड मिलता है किन्तु किसी भी रोकत धार्मिक पालक को हत्या करने वाले दार्शनि का राज्य छोड़ करता है। बाहरी वास्त्रात्त का मित्र आर्यवर्ग पालक की हत्या करने वाले राजा का पास्त्रात्त को बुझाने का राज्य छोड़ करता है। जो भी वास्त्रात्त के दार्शनिक का धार्मिक ठहराव करता है तथा पास्त्रात्त को बुझाने का राज्य छोड़ करता है।

मूँचकौटक का वल्लु विमान नायक का दूरित से अत्यन्त उत्तम है।

क्षणवतु के अन्तर्गत वार अर्धबूटीय, पार्श्व आर्यवर्तियाओं तथा पार्श्व सोन्याओं वर्षित है। धूप वल्लु के अन्तर्गत चूरकर का भुजक प्रयोग हुआ है।

नेता के अन्तर्गत नायक पास्त्रात्त धीरप्रशान्त व नायिका पतन्त्रेन्या नायिका स्थापना व पारस्त्रात्त धूपा का वर्षन मिलता है। अन्य पाथ्रों में श्रावण विकृत शोकलिंक, मदनिता इत्याद्विद है।

रत वर्मन के अन्तर्गत प्रधान रत धूमार है, गोष्ट रसों में काल्य तथा कल्य इत्यादिद प्रमुख है।

क्षणवतु, रेता तथा रत वर्मन का धेरार दार्शन अध्ययन में देखें।
वस्तु: मूल्यांकन का भारतीय स्वभाव उसकी परम्परागत उदाहरणता के आधार में प्रकट होता है उनके उपरेफार में प्रतेक व्यक्ति अनुष्ठ की दीर्घता में दिखायी देता है, इसका समान अपवाद पुरी होता है ।

कारिदास -

अतः आजमगी के विगत स्थवरीय महानाटकार कारिदास के संस्कृत साहित्य में ही नहीं, अपने विद्वानों के आराम भारतीय संस्कृति का उनका व्य प्रस्तुत करके उनसे पूर्वत तक भारतीय जीवन के प्रति दायित्विन हो लापरा । वार्ता में वे रास्तेदार है परन्तु परम दुर्मिला का पिया है कि ख्यात देश के प्रथम विक्रेता महानाटकार ने स्वतंत्रता क्रमांकों का निर्माण करते पर भी अपने जीवन स्वयं काल के पिया में अधिक िलिय की हाती है, ताकि सुविदार ने भी क्षेत्रों में आते हैं । उनकी विद्वता मध्य काल के पिया में पिराज्ञ लेखित नहीं हैं । उनके काल स्वप्नद्रा तीन मत माने जाते हैं - उद्धो साताब्रो ई- का मत, नृत्यकालीन मत तथा प्रथम जाताब्रो ई-पूँ मत । अर्थातः पिराज्ञ कृतिय का मत ही मानते हैं ।

उम्मीदों ने रेखा विक्रेतारिहत्य में श्लोकों के प्रति का अपनी पिया के उपलब्ध में ईशा से 57 कवि पहले मापांक लिखते तत्काल वार्ता चित्त्र न तो किसि अनुसार विक्रेता के नाम के पिया हुआ । कारिदास विक्रेतारिहत्य के नवरात्रों में वे एक दे ता : वे अपने आत्रेय राजा के सबबलिन तहत हैं वे लेकिन वर दुक्तार के पिया में न पड़कर उसकी कृति को केहिं सम्बन्ध ठहराते हैं ।

कारिदास ने पूर्व संस्कृत साहित्य में एक लघुब्रो मानवपरम्य का प्रकाश दो पुजा था । मात्राकलिजनिधि की विलापान्तर से स्वरूप है कि भात,

अथवा केषव, संस्कृत नाटक, पृ.139
लीलवत, अवपुन्याधि प्राचीन नाट्यकारों की सामान्य परम्परा पहले से भली आ रही थी तथा उन्हें नाट्यकाल्यांके प्रमुख चित्त मिल पुकी थी।

यथावत् गोविलदास के नाम ते अनेक अन्यों का उल्लेख गितात है तथापि उनके प्राचीनता अनुसार लिखना गायन है - शुदाकर, केदार, कुमारस्मय तथा रघुरंजन और तीन नाटक - मालेवाडग्रन्थिनि, विद्यार्थीय तथा अनुभावार्थ

मालेवाडग्रन्थिनि -

मालेवाडग्रन्थिनि में रेतिसिलिक पूर्णमृङ्गक की भाषार भाषा आदि अन्त में विषेष राजनीतिक पृष्ठ का प्रक्षेप करके अग्रमृत्तिक तथा मालेवाड चा प्रमुख प्रश्न
का विषय विख्या गया है। यह परिचय हें का नाटक है। इसमें अन्त शुरु की ग्रामीण की परिस्थिति में पत्रकालीन अभ्यास ब्यापार के दृष्टि होते है।

राजनीतिक धाररणी के दासी बना विद्यार्थी की राजमृत नाटकवाद अपने अनुभाव
लोककथा तथा राजा अग्रमृत को अर्कित बनते है। रानी धाररणी के कार्यांक अने
पर भी राजा मालेवाड़ के मिलने के लिए प्रमुख नाटक है। एक अन्त में धाररणी उसके राजमृत होने का स्थायर नाटक उसे दासी शान के मुक्त का
अग्रमृत तथा उसके प्रश्नप्रसार की स्पष्टता प्रश्न के देते हैं यही इसका
कथन है।

मालेवाडग्रन्थिनि का कथन यथा होने के ताससाध विश्राम भी है।
गोविलदास ने इसमें नाट्यकारों के विषय की स्पष्टता करके गीत हें का तथा

50. पारिपारिकः- या तात्क क्षेत्रार्थ भासकिक्षमृंगलकारी के प्रत्यावर्तिक है: अग्रमृतक विधायों को
परस्कर्षों अनुमानः।

- गा -अ - प्रथम तृतीय, पृ-६

51. प्रथम, श्रमर, सत्कृत के प्रतिहारिक नाटक, पृ-२३५
प्रश्न रिया है।
अत्यतंत्र के अन्तर्भूत पाप-अशुद्धियों, आयामशालाओं एवं सिद्धांतों का
वर्णन हुआ है।

तापक अभिमति तथा तापक वालीका है। अन्य पुल्ला पात्रों में
विद्धक - गोतम, गम्यस दर्दल आदि हैं तथा नारी पात्रों में रानी तापकोऽ,
इरायति, सेवकी, पृथ्विभाविका इत्यादिद। यथैः आदि गौरविक पात्र है।

इसका अभी रत शुभार है। दात्य तथा कस्य आदि रतों का आगम्य में
पश्चात् मिलता है।

विप्रोक्षपक्ष -

पाप आदि में यूक्त त्यक विप्रोक्षक्षपक्ष नोटक की वैश्विक में भाव है। केता
कि विप्रोक्षक्षप के क्षा है - तात, श्रम, नारी पाप आदि में यूक्त, देखा अन्तर
प्लुधरा के आत्मविश्व न्यूयक्क ओ नोटक करते हैं। इसके प्रत्येक आदि में विद्धक रक्षता
है तथा प्रथानक में शुभार होता है ।

इसकी क्षा ब्रजेद, श्राध भ्रामण, पठारात्त आदि अनेक अन्यों पर
आधारित है। जिंके अविदात ने विप्रोक्ष वर्गमय विध पार्वत्त का नामक रूप
दिया है। इसमें महादार दस्यवत्त और अप्सरा उर्वरी की प्रश्नकथा का विकास
कर्ता है। पुस्तवा केतामपक्ष के किन्नरोक वोटक हुई उर्वरी नामक अप्सरा का केकी
नामक देते हैं उदार करते हैं। इस प्रथा मिलन में हो वे परस्पर अनुरूप हो जाते हैं।
भारतमुनि के शाक्षक उर्वरी परवलोक मात्र पुस्तवा के तथा रक्षता है। एक दिन राजा
के एक विनाश कुमारी को देखने से हुई उर्ध्वी लटक का गरबितन के मन्दमानन
उपवन में जला जाती है लेकिन रॉयस के पृथ्वी देवेन निधि न उपवन में वह क्षत्रय
में प्रयोगिता हो जाती है। राजा उसके विमोचन में बंधुओं में सक्षम है संसारी
मोक्षके उपन में उर्ध्वी पुनः पूर्वको में आ जाती है तथा जीवित का बिगाड़ हो जाता
उर्ध्वी के गरम से उपवन राजा के अपने कुमार आयुर्वेद को देखने पर उर्ध्वी सन्नत की
आजानुनोक तत्काल सन्निहित लोट जाती है। राजा अपने पुत्र का राज्याधिकार कर
पन जाने का निवास करता है बैठना नारद सुनना देते हैं जैसे हेमकान्त गृह में
सन्नत की लक्ष्यता जाने पर उन्हें उर्ध्वी जीवन भर के लिए मेल जाती है। वह अनगा
निदर्शन गृह है।

अध्यात्म के अन्तर्गत विकासीय योग में वृद्धि का प्रकृति योग आधुनिक
तथा तीनिक वृक्षता है। विकासीय आयुद का भी प्रयोग मिलता है।

नायक पुत्रवाह घोरोदात्र अनेक तथा नायक उर्ध्वी प्रगल्भ है।
प्रत्युत्थ - नायक, बंधुएँ, भरतबुद्धि तथा उसके गुरु Ober का रूपक शब्दरूप पुनः
पुत्रामों के रूप में हुआ है। ली पुत्रामों में अक्षरक - पुत्रवाह का प्रथम तत्त्वी
विनेक्षण, रचना आदि अप्सरार है।

रत्नकर्मी के बुधिग्निक से द्वारपाल पूर्वार भोजन तथा विकासीय उत्सुकताओं में
मिलता है। दत्ता, क्लम आदि नौष लप में वार्षिक है।

अभ्यासकाल -

अभ्यास कालकाल न केवल स्तिथतार तात्पर्य के मृदावर्त में सूर्योदय स्थान
रखता है, अपने विश्व तात्पर्य में भी क्लम विश्वस्त स्थान है। इसमें उपेक्षा
की नातकरणा समझदार एवं कचराप्रतिका का पूर्ण पौरषपाल मिलता है। यह नाटक
अपनी रूपकात्, रपना जोशल एवं कृप्रियता के भारम तेस्लू के समस्त दूर अन्य-गुणों में उद्धृत नाम है। इसी करण समाजोपज, विषयाँ भारतीय तथा पाश्चात्य ने मुख्य दौर से प्रशंसा की है।

इस नाटक की क्षेत्रसत्ता प्रदर्शन के एक उपाध्याय पर आधारित है जिसे गृहराज ने अपने उद्वर्ग कपना एवं नाना जोशल ने अनेक पहलवान तथा शोधकार ने का नाटक के उपस्थित बताया। इसमें कुल सात कौश कहीं है। हिस्तानाथपुर के पुरात्तिक नेता दुर्गानंद और महाराज कपन की पारंपरिक धार्मिक बांधकाम की प्रशंसा निवड की गई है। राजा दुर्गानंद एक दिन में पीढ़ा करते हुए उपोषण में प्रवेश करते हैं, पहले पर उनका श्रवण का साधन होता है, उसमै पूर्व पारंपरिक ग्रन्थ करने के लिए पुनरोगन के प्रशंसक मानस उत्पन्न होने पर वे मन्त्रिक विक्र्या कर लेते हैं। राजा दुर्गानंद महाराज के आगमन के पहले ही अपने नाम की एक अनुष्ठान श्रवण को देख उसके आयाक्यक आर्य से वार्तालाल राज्य दर्ज करते हैं। इतनी श्रेष्ठ ग्रन्थ के ध्यान में बैठी हुई श्रवण निवड दुर्गानंद श्रवण का उद्देश्य लक्ष्य न करने ते शारीरिक हो जाती है। श्रवण को दोनों तरह ग्रन्थविद्या तथा अनुष्ठान श्रवण को मनाता है, जिससे वे पद्धारम व कलन्दर से शापसमाप्त की अवधि बदलते हैं।

धार्मिक एवं अन्य ग्रन्थक श्रवण को नत्ती पाठक गौरव से आदि के साथ वे पत्तिमूल हिस्तानाथपुर कौश देते हैं, पहले पर राजा श्रवण को पद्धारम व कलन्दर से इसका अर्थ देता है, उसे पद्धारम की वस्तु अनुष्ठान भी नहीं मिलती है, इस पर वह प्रस्ताव करता है तथा उसके समय उसे पहले बेंटकार वापसित कर आते हैं। राजा पुरोहित के लालित्य के एक दिशा व्यवस्थित श्रवण को उत्तर देने के अर्थ पर

53. जीनतिक्षीर भारत्रां, तेस्लू सान्तकार, पृ. 94
स्थात मारीप के आश्रम में ते जाती है। भक्त मुख्यारे को मछली के पेट से राजा की नामांकिता अंगूठी मिलती है जिलके दर्शन से राजा को तम्मूँदा पूर्व मृत्युन्नत का स्वर्ग हो जाता है तथा वे भक्तलता के रेखाओं में तड़प जा जाते हैं। इत्यादि की स्तायता करके तर्क से लौटते तक मारीप आश्रम में उनका अन्य पूना तर्कदमन तथा पिया भक्तलता ने पुनःनिश्चित होता है यही क्षण का उदिहित शरार है।

शाकुन्तल नाटक भारतीय दैवित्तक का पूर्वनांत निर्दर्शन है जिले भक्त आदर्श राजा, पत्नी अपने अर्चितद्रूढ़कंठागोर छोटे हैं। प्रसुतु अंक तो तर्क दर्शनीय है।

अनेक शाकुन्तल में पाय अर्थशक्तियों, वायुविलयाएँ तथा बायवेद्यों का स्त्रोपति वर्णन प्रणय क्या है। युयुद्ध वस्तु के अन्तर्गत पिचालम तथा व्रजत्रक का वर्णन दर्शनीय है।

नायक दूरतुत धीरोदत्तत तथा नायिना शकुन्तला ख्याता वोट में जाती है। अन्तर्विश्व पारसी में पिचालम - पाठ्य, कवि की, आठ-गौर इत्यादि तथा की पारसी में अथ, कपि, नामवास प्रियदित आदि प्रथु है।

रत वर्णन में प्रथ्यान कृष्णार रत है तथा यहाँ पर सेवक कृष्णार का अवधारण है। पिचालम कृष्णार, दात्म, कपि आदि गोष हूँ में व्याप्त किये गए है।

अवधारण -

संख्या तालिका में बीड़ नाटकारों में अवधारण प्रथ्य नाटकार माने जाते हैं। दे पूराव बीड़ लाए बिनकक के राष्ट्रकूल स्वे आक्षेत राज्यकार है। किंतु का राष्ट्रकूल 78 ई से 120 ई तक निर्धारित है, उल्ल: अवधारण का अल्प प्रथ्य वर्णन की का अल्प तथा विशेष वर्णन की का प्रारम्भ माना का लक्ष्य है।
उनके दो माताजी लोगेवत तथा शुद्धार्थ हैं और एक नाटक शारीपुरुषक्रम है। सन 1910 में बुधंग नामक एक पाण्डित्य किया जो जयरथ श्रीकार के पुराण नामक स्थान में प्रायोगिक दर्शनिक लेखों की भोज करते हुए प्रायोगिक लेखों का एक बुद्ध समुदाय उपलब्ध हुआ। जिसमें तीन लयक भी पाये गये हैं, जिनमें से एक नाम शारीपुरुषक्रम है। दो अन्य अनुसरण एवं उपलब्ध हुए हैं जिनके नाम पहले रचनात्मक तथा तीसरे पता नहीं पलंग।

शारीपुरुषक्रम नौ अंशों का लयक है, जो प्रक्रिया की प्रेमी भी अलग है। इसमें शारीपुरुष और मूर्षिक्षण के क्रमानुसार बुद्ध के उपदेश अनुसार का बोध ध्यान दिया करते हुए। यह अध्यात्मिक नहीं है, वह आध्यात्मिक नहीं है। इसलिए उन्होंने अपने नाटकों में प्रेम तथा लोगों की भीतरी प्राकृतिक भी है, जो आत्माओं को प्रभावित करती है। इसी नाटकीय स्वरूप पाया जाता है। 

युक्त विषयों की वजह से वे अपनी स्वतंत्र धर्मप्रपंच विक दे। नाटक खूं-खूं या गोस्वाम, वह भाग्य नहीं समझता। उन्हें पाठियों में बुध, मूर्षिक्षण, औषधेश्वर तथा विद्याक अर्धे दे।

---

यदूरथ तत्काल दृश्य के इतिहास में वेशग भाषा विशाद कल्पन दर्शक मुखरकिझ एक सन्तान नाटक न होता खूं वल्लय-प्रमाण नाटक है, जिसमें राजनीति की सूचना प्रदाता व कुल रचित राजवंश बोल दी सबकु च है तथा लख देखे से रखी र्मी दिखाई देता है।

---

54. कादिकादीय भोजन, ललित नाटकमार, पृ. 115
मुदाराध्य नाटक अनेक दृष्टियों से तैल्पूर ताराद्य में आदित्य है।

तैल्पूर की सामान्य नासुङ्खारा के भितरिक हीम्र रेम-कानी का ही
निधानत अभाव नहीं है प्रत्येक हीम्र प्रणय का वातावरण भी नहीं है। इस नाटक में
नारिकल का एकम अभाव है और नाटक के वातावरण को विलय तथा खोलने वाले
शिक्षक का भी पता नहीं है।

शिक्षाकार्ता ने अविकलता तथा बुद्धि आरोग्य अन्य नाटकारों की भाँति
रचना में भावपत्र के विषय को अपेक्षा विचारपत्र के गाम्मौर से भ्रेत्ता प्रदान की
है जिसमें उन्हें अभिक्षण तथा अभिक्षण अभिक्षण अखाड़ा आदि है। नाटकार ने विषय की
गम्मीता को देखते हुए उसे दूसरा जाप्त के लक्ष्य अनुसूची रखा है। इस
शैक्ष क्या कार्य के बादों में - कुछ शिक्षार्थी के मत से दूसरा जाप्त की क्षैती रही
नाटकों की परत करते समय आलोचक का बिपंज सबसे पहले मुदाराध्य की अनुसूची प्रस्तुता।
इस नाटक में नाटकार ने विषय वस्तु को अपेक्षा अनेक नाटकीय प्रकृतिका थोपपा में
अपना नाटकपाठी निरंतर प्रदान किया है। कुलमें शैक्ष यथा योग दृष्टि, शैक्ष का ज्ञान का राज्यां
कितंता में उद्देश्य से तथा विषय का अपने वातावरण में अपने वातावरण में पाने लेता, रिखा गया है।

नाटक आयत के लेकर के चार रोपण के पूर्ण है। यह नाटक राजतिक
प्रसंग का उद्देश्य के अर्थोच से नाटक है, जब वस्तु का विनाश हूँ निर्भय वाले
व्यापार तुरंत ही हो सकता है पर मुदाराध्य का व्यापार सत्य विनाशीह होते हुए

55. एक्षेत्र उपाध्याय, तैल्पूर ताराद्य का शिल्प, पृ-507
56. भोला शेक, क्या, तैल्पूर, पृ-354
57. विकास संदर्भ, तैल्पूर द्वारा संस्कृत इंसाध्य, पृ-245.
भी रक्षातिथिकता है, उल्ले तिलारों की शक्ति, पक्षों की नृत्य या सीधे
की शरीरता का निर्भर नहीं था तथा पाते पानी की उत्तेजना भी ही मिल जाता।

विश्वासदेव के धीमापोषण के विषय में नाटक की प्रतापवना से दोपहित
होता है कि वे तामर्त्व विद्वानःदत्त के पार तथा महाराज भास्करदत्त के पुत्र थे।
विश्वासदेव में एक राजनीति विश्वास यह नियुक्त आचार्य के तरीके मुख विश्वासाने के।
उनके स्थायित्वातु के विषय में सभी विद्वानें सक्रीय नहीं थे। कृता कारण नाटक के
भागभाग्य में आया हुआ पारंपरिककर्तम, पारंपरिककर्तम आदि पांडेय है।
पारंपरिक तत्कालीन इतिहाद पौर ने अध्यात्म पर विद्वानों ने उनका जात 375-413 ई.
से तकर तकरीब शाक्ति तक माना है। यथार्थ तत्वों तत्वों शाति का उत्तराधिक ने
विश्वासदेव का युद्ध एवं अब नामोलेश अपने युद्ध में किया है। ही-वी नीव ने
उनका जात तथा शाति शातियों ने पहले माना है तकर तकरीब नहीं है जो उन्हें
नवीन शातियों का मानने में अवश्य रखते थे। यथार्थ यह तृतीय और पहले की हो सकती
है।

विश्वासदेव के नाम से मुद्रारक्षा के अतिरिक्त दो और नाटकों का उल्लेख
मिलता है - देवीकर तथा अभिव्यक्ति सौदिभि या अभिव्यक्ति को प्रशिक्षित । इनमें से
देवीकर नाटक अब उपलब्ध हो गया है।

58. भौला श्रीराम, प्रणाल, वसंत, तस्सूल नीव जभान, पृ. 357
59. सूधार: उन तत्कालीन विद्वानःदत्त के पार तथा महाराज्य तत्कालीन नाटकों
को विश्वासदेव तत्वों तत्वों से मुद्रारक्षा का नाम नाटकों नामोलेस्वरूपों मिला।
- मु.रा., प्रथम श्रंक, पृ. 9
60. ए-वी नीव, तस्सूल नाटक, पृ. 212
गुदाराभ्यास नाटक की विषयवस्तु इस प्रकार है - धार्मिक नन्द देव के अनुत्तर राक्ष के वाम में लगने हेतु कई योजनायें बनाता है तथा अपने पुत्रों को राक्ष के पीछे लगा देता है। वहाँ राक्ष भी अपने स्वामी मलयेकु ने स्वयं योजनायें बनाता है लेकिन धार्मिक विषय के अनुसार उन्हें पूर्णतया न भरने में असमर्थ रहता है। इसके चार और चन्द्रसुप्रभा राक्ष के धोखा देने के लिए नौकरों में से एक जोड़ता है। राक्ष देखीजुठने पर जोड़ों के दूसरे होने वाले दोषों से मनोकाम करता है। मानुष और मलयेकु इसे धर्म और धीरे-धीरे धर्म के पुत्र होते हैं। मानुष आयुर्विज्ञान ने राक्ष द्वारा उठी हुई अनौक्षणों को अनेक समय पूर्व में राक्ष के प्रीत की यज्ञ के बीच ली जाती है।

राक्ष के विषय अधिकृत पाप साधनों धार्मिक इलाज के मलयेकु मारने के आदेश देता है तथा राक्ष के अनुसार के अनुशासन के प्राण अंत अत्यन्त अनुशासन के तबधी देता है। धार्मिक के विश्वास पूर्व होने लगते हैं। राक्ष अर्थ व्यक्ति को पात्र घातने से मना करता है तथा उसे तारा वृत्तान्त अनुपालन वधन की प्राणिकर करने हेतु जान धार्मिक के पास का आता है। धार्मिक भी उसे वधन की प्राणिकर के बाल प्रेमुपत का प्रमाणपत्र स्वीकार करने हेतु मना होते हैं। धार्मिक को उसका सूक्ष्म राज्य प्राप्ति कर देते हैं। वधन का मुख्य नगर का केथी चेतना होती है। तभी उसे यज्ञ धार्मिक के साथ यह नाटक समाप्त कर देता है।

क्षणिका के अनुसार मुदाराभ्यास में पापों अर्थात् व्यथायाँ, अध्यात्मिक से तत्तपेयाँ वोरियाँ हैं। इसका हेतु धार्मिक का भी कर्म अयोग्य होता है।

नाटक का नायक निर्देश चार्कक है जो कि अपनी अर्थव्यथा से मनोरंजन लिए पाता है। नायिका का अमाव है, निम्नान्यक राक्ष है जो अपनी स्वामी-व्यवस्था के लिए अत्यंत है। अन्य पुस्क पात्रों में चन्द्रसुप्रभा, मलयेकु, मानुष और
रस्कर्मध्ये मुख्य रस पीर का रस्कर्म दिखा म्हणून रोगच, अस्वास्थ्यानि आरोग्यमध्ये वर्णित झालेले होते । पतलूनः मुळार्थे रक्षणाध्यात्मक न होकर घटनाप्रधान हे अतः रस्कर्म का मिळता हे । क्षणशुलू नेता तथा रस्कर्म ह्यांना पिलूत अद्यावने म्हणून ते देखील ।

रस्कर्मक्रम -

रस्कर्मक्रम त्यानेपर्यंत के एक देवोपयमान समाधि तथा शासक होते के तार्थकानु राष्ट्रोत्तर ते । उन्होंने नायाकालित्य में कर्षयम कारालेखळ में कर्षयम कारालेखळ की परम्परा का प्रकर्म दिखा है । यांदा नाय, कालित्यका तथा भूमि ने नायाकालित्य को नायाकालित्य की दृष्टि से पिका करते रे अपने को अमर कर दिया है तो कर्षय ने भी नायाकालित्य की दृष्टि से उसकी एक नयी गोठ देते रक्षालेखळ दृष्टि से नयीन परम्परा का श्रेणीकरण करते अत्यंत आपूर्त पूर्ती का स्थान दिया है । रत्नाकर और तालिका में वे कालित्यका ने विषयक ही पद्धति है, पहलें उपवर्त्यगा और विपाको की शांति का महत्व अनेक जिन में विषयक है ।

श्रीतहारकरों ने रस्कर्मक्रम का श्रीतहारक 606 ई. से 647 ई. तक माना है । इस प्रकार उनके काल के समय में पिढ़िनों ने श्रीतहारक है तथा भरी उनके जागरूक शाकाहार्य के मत्य तक माने हैं । वे वार्षिक 63 के चर्चा के जिनकी रस्कर्मक्रम में उनका वर्णन दिखा है । रस्कर्मक्रम पिढ़िनों के आत्मवादता थे तथा कृपा ।

61. प्रवाम भाषा, लेखक के राजविवादितक नाटक, पृः 317
62. रामभाषा कीव, लेखक के नाटक, पृः 180
63. वडी, पृः 173
कार्यरत्न के बतो मे उनके धन प्राप्त करते के इसका निर्देशन ममति प्रमाण गणित विभाग के गणितसूचक के प्रति मे दावा आदि कीमतों का श्रीमत से धन प्राप्त करता है।

पसंदीदा नामक वाल रमण ने नाम श्रीमती का उल्लेख मिलता है - प्रपाधिका, रत्नाकरी तथा नामार्थ । डिप्टी उन्हें इनका विकत हानि मानने ते इन्हार करते हैं तथा राज्याओं को जिसे आश्रित कीि द्वारा विकत हुआ मानने हैं वितक इस पीढ़ी मे कोई पुरात कम नहीं मिलता है । कथा शक्ति के आदि मे यह न्याय अर्थ इत्यादि है कि वे तीनों नाटक एक ही विषय की प्रकार हैं । तीन नाटकों की प्रतिवेदनाओं मे धन को करता बाते हुए उन्हें निम्न कीि जा गया है ।

प्रासंगिकता अवस्था: तथा बाल्य तार्किक के आदि पर धन को ही इन कीमतों का वा विस्तार लेख मानते हैं ।

प्रपाधिका -

प्रपाधिका पार आदि को एक नाटक है। नाटक का तब्य नादराचार्यों ने इस प्रकार तया है - जबकी क्षणसूत्र को साधन है, नामार्थ व्याख्यातवा तथा ध्यानपूर्वक प्रकृति का व प्रहार रस शूलार होता है, लोकार्थों की प्रदान ना, पार आदि, कीि पुरण का आदि, प्राकृतिक अवधार न्याय होती है । यह वाल्य अवधार, वह नवनीत तथा रोटा टलेज ते वृत्त होती है, नारायणें कथा तथा देवी दो दुआर की होती है । नाटिका की नाथिका अवधार प्रक्षेप होती है । राजा उससे

64. श्रीकिर्तिलोकको दसनामिष धनन । - के पृ, प्रथम वल्लर, पृ 7 नन
65. ए-दी, तरक, टस्कू नाटक, पृ 173 नन
66. एक-सन दसमुक्ता एक सँकेत के ।, अ हिन्दी, अपि तस्कू विद्यादेश, पाल्मूल-1, पृ 255.
दरटा हुआ अन्य कथा से प्रेम करता है लेकिन अन्त में नािका उत्तम अते योग कार्त्ता देता है।

प्रियदर्शिका नािका में वर्तमान उदयन और महाराज दूसरार्क की पुराने प्रियदर्शिका की प्रेम कथा का रोचक वर्णन दिया गया है। इसके कारण पर महानोंके अनुभव के वास्तविकतावर्धन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। प्रियदर्शिका की कथालू तथा पवन विकास दोनों दो लीक्षणता तथा सरल है, अन्य कृतियों की भाषा में प्रियदर्शिका उद्योगों की रफत नहीं है।

पत्र विकास की दृष्टिकोण से उदयन नािका तथा प्रियदर्शिका नािका है। अन्य पुस्तक पाठ्यों में दूसरार्क, पिन्नवत्त, पिन्नवत्त तथा पिन्नवत्त हन्तादि देने वाली पत्रों में भावधारता राखेंधरनी आपात है।

नािका का प्रभाव रत बृहत्तर है, केवल रतों का वर्णन भी प्रतिकृतातार उपलब्ध होता है।

रतना०

रतना० भी दारों की एक नािका है। इसके वर्तमान उदयन तथा उसकी रानी की दासी तारिका की प्रेम कथा वर्णित है। इसी नािका रेतल देव की राजपत्रा रतनाल भी है जो कि पौराणिक का बना कर रही है।

रतनाल का पवन विकास प्रियदर्शिका की अनुभा अधिक प्रमाणित स्थ कृतिया है।

रतनाल का समपूर्ण कथानुशासन से उत्तराधिकार है। रतनाल वर्णकृत की
लघूकृत बृहत है। इसकी तरह हरी चित्रण यह है कि जहां उसका पतन-विधान नायकासौंयोगी खेली में हैं, वहीं वह अभिवाद्योयोगी है।

क्यापयलु ने अन्तर्क इसमें पाथों अजीव्यशित, अन्यावस्थाओं के तत्त्व-तर्फ से बन्द हुआ है।

नेता के अन्तर्क उदय धीरतमत नायक है तथा नायक रत्नाकर है।

अन्य पुस्तक पाठों में मन्त्री योगदान विद्वान आदि हैं तथा ली कांडों में उसका विषय व नृत्यार्थ आदि वोरिक है।

रत्नाकर का प्रत्याम रत गूंगार है, क्या आदि रत अंकुर में वोरिक है।

नाटकनिद्रा-

हर्षवर्धन विशेषत नाटकनिद्रा परिपाकों का एक नाटक है जो क्यापयलु तथा नायकासौंयोगी में पूर्ववर्तिक दो रचनाओं प्रवर्तित तथा रत्नाकर ने भिड़न है।

इसकी क्यापयलु तथा तर्फ में पूर्ववर्तिक तथा नृत्यविधा में पाथी बनने वाली बोधकपथ पर आयारित है। अन्य के पूर्ववर्तिक ने विषाद बुधार बोधक मात्र तथा विशिष्ट क्या मलयालम तथा श्रेष्ठ विद्वान की भ्रम का वोरिक है और उत्तरामान ने बोधक मात्र अपने प्राणोंतरां बने के लिए उपज दोने पर महत्त्व विशेषत का तय करने का रोचक वर्ण उपलब्ध होता है। इस नाटक में नाटकमारर ने द्वा, द्वा तथा आलमान आदि पाठों का मनोरमविध उपवािता दिखा है।

नाटकीय विधान की पूर्णता ते नाटकनिद्रा से लेकर नाटक नहीं कहा जा सकता।

-----------------------------

63: वापस्तिक मैटुला, सौंयोग प्रस्ताव अर्थतः, पृ.685।
उत्तर क्षेत्रि वृद्ध धर्म से प्रशासित नायक बीमूल्याद्रि नाम भव्यति ते प्रेम मुख्य ब्रह्म से अत्मबल है।

इत्यादि नायक बीमूल्याद्रि तथा नायिका मलयति है। पुख्ता पान्नों में पिनदःकुं, मिल्हुः, पिवुः आदि तथा स्त्रियाद्रि में गौरी तथा नक्षत्रादिका आदि है।

यह ने अपने दुनियों में श्लोक विशेषका नात्यशास्त्रीय नियमों का पालन रखा है किन्तु प्रकार धर्मव्य ने अपने अन्य देवतापुर यह की रचनाएं ते विशेषका रत्नाद्रि से संपन्न अनेक दर्शक उदाहरणस्वरूप उल्लो रित्यें है।

भव्यति -

सैकृत शास्त्रादि के इतिहास में बीमूल्याद्रि वरिष्ठादि के भाद मानय नाटकाद्रि में भव्यति का ही नाम आता है। महापराकार की प्रतापना में अपना प्रेम देते हुए भव्यति ने क्षति हे रोक दे दैविकपथ में पद्मपूर नगर के निपाती उद्योगवाणी शास्त्रियापाल में जन्म लेने वाले, कृषि युद्धदेश की तैरतारीय शाति को मानने वाले, आदरणीय, वेद पद्धतियों को मानने वाले तथा सुधार करने वाले उद्योगपाल को हृदय के पौज्ज पिता नीलामणि, माता अनुबंध के पदवाद्य-स्मारक पूजा ने।

भव्यति के जाल के विक्षे में पिताद्रि में वैमल्य नहीं है। सल्यानी जलाला बर के पूर्ादड़ में होने वाले पान ने भव्यति का नामस्थल ही किया है।

लघु पादमान 801 इ. से उनके उदरोक्ष राजवीरत के पय को अपने अन्य में उठी।

690 अभिस्तु दैविकपथे पद्मपूरं नामन नामयु ... ... ... ... ... ... भव्यति नाम अनुबंध पूजजः। महा-पू, प्रथम ईंक, पृ० 4-6
विध्या है, आँ उनका समय इन दोनों के बीच का है। वे आदि सत्य के पूर्वार्द्ध में शासन करने वाले कपिल नरेश यज्ञोपाध्य के आश्रित कोष के आँ उन प्रमाणों के आधार पर भक्तिवाद का काल 700 ई. के लगभग या सातवीं शताब्दी के उत्तरार्थ तथा आदि सत्य की शताब्दी के पूर्वार्द्ध में राष्ट्र और उद्देश्य है।

भक्तिवाद के तीन रूप के यज्ञ का होते हैं। महावीरपरारत, मातातीमाध्यम और उत्तररामपरारत।

महावीर पारारत -

भक्तिवाद के तीन अंशों वाले प्रश्न नाटक महावीरपरारत की क्षायलु पाल्लिका, रामायण पर आधारित हैं जैसे भक्तिवाद के उसे नाटकीयकृत प्रदान करने के उद्देश्य जल्दी परिपारारत हो जाती है। इसमें रामचरितमान के पूर्व से भक्त राम के रामायणिक के तक की कथा विवेचना है। तत्कालीन विद्वानों ने इस रचना को उद्विग्न सम्प्रति प्रदान नहीं किया था, जिसका उल्लेख भक्तिवाद के मातातीमाध्यम में दिया है।

अभावलुः के अन्तर्गत पारंपरिक अर्थकृतियाँ, आयामिकेत्य तथा सीधत्य वर्णित हैं। अद्विपक्षिकों का वार्ता भी मिलता है।

राम कथावादी नाटक है तथा नायिका तीता है। रामायण प्रतिमानक है। अन्य पृथक्कह पारं विवाहित, ज्ञान, भक्ति आदि है। नारी पारं नंदेदरी, निर्भ्राता तथा अन्यत्रिक आदि का उल्लेख मिलता है। इसमें रामायण के पार्थिवत पावन भी निरोवार रखे गए हैं।

70. आद्यार, ए. मेकॉनल, ए दिल्ली अफ्फ तस्कु विदेश्वर, पृ.-307
71. मातीमाध्यम 108
नाटक का अंगी रत बीर है तथा रोड, शूंगार, क्षण आदि अंग रूप में वर्णित है।

मालती माधव -

मालती माधव प्रकरण की कौटि में जाता है तथा इसके दस अंक हैं। इसमें मधुमेषी के बीमारी की एक गुप्त, रोमांचक प्रेम कथा का वर्ण दिइया गया है। कथा का आधार अन्य के साथ देखा गया है जिसका उपयोग कथा में दिए अनेक कथाओं के यह साम्य रखा है। कथा के पूर्ववर्ती यादों में परिवर्तन करने से कथनके ने लघु नवीन लघु प्रकरण का लिया है। जेवाल कुछ ग्रंथों में साम्य देखने ही प्रकरण के कथनके को अधारित मान करना गोपनीय नहीं है।

इसमे पच्चिमी नरेश के मनुष्य बुद्धिवाद की पूरी मालती पर उन्मतियों में रोग अन्वेषण अरंग या युयुप्पल या देवरात के पुजु माधव के प्रेम और विवाह की कथा वर्णित है।

कथापत्र के अनार्की परि किस्मकृतियाँ, अवार्तत्वार्थ तथा लिथियाँ वर्णित हैं, अर्थितक्षेत्र भी वर्णित है।

नादस्तूर्गीय नियमापुलार माधव धीरश्रावण्ड नायक है तथा नायका मालती है, नन्दन प्रतिनायक है। मकरंद माधव का तालाब है तथा मध्यमन्त्व, अन्नोपेक्षा आदि नायका की वटावटियाँ है।

प्रकरण का अंगी रत बीर है तथा क्षण बीमार, रोड आदि गोष्टा रूपे का भी वर्णन मिलता है।

------------------------

72। प्रकरण प्रसार, भवभूति के नाटक, पृष्ठ 40
उत्तरारम्भवीत -

भक्ति के सही नाटक उत्तरारम्भवीत का आधार वाल्मीकि रामायण आ उत्तर आगे है परन्तु कविने नाट्यशास्त्रीय परम्यरा जा निवार्त करने केले कुमारीयांक पत्रांकों के साथ मुक्को में परिवर्त दिये, जिससे यह सुवान्वत नाटक बना है। इसके अन्त में रामलीला का पुनःरीति दिखाया है, जबकि वाल्मीकि-रामायण के अनुसार तीरा पृथ्वी में का वाती है। इस नाटक के यात्रा के भक्ति के संदेश दिया है कि प्रजारक ही राजा का श्रद्धा ध्येय होना चाहिए, इती का पालन करने हेतु राम भूष, शेष, दया, भक्त तथा लीला ल्यात रने में भी व्यापा अनुग्रह नहीं करते है।

इस नाटक में भूष लीला भूष हैं जिनकी वैक्तिक ध्यान इस प्रकार है- पितारक हेतु भूष लीला पृथ्वी को देखने की अभिलाषा करती है, इस राम प्रजा में तीरा के किसी अपवाद सहक अनुरक्षन हेतु लक्षण के द्वारा भागीरथी जो देखने के लिए तीरा को निवारित कर देते है। वाल्मीकि के आचार में लब और भूष दो लक्षण रह रहे है। शनिकु नामक भूष का व्य अरसे यार हेतु राम देवधार्य प्रेम देखकर अश्वाहु बदते है। भूष तथा लीलातही तपस्या के राम के अव्याशय यह का पता फटता है, तीरा लीला के लिए मूँर्खी पाँच राम को पेतता में लाती है।

अव्याशय यह का योड़ा लब और भूष द्वारा लोर किया जाता है तथा अव्याशय अनेकार्य पन्द्रह युग्मारूं द्वारा परामीत होता है। अन्त में

73

स्वातष्ट्र द्याय प तीर्थम घ योद वा जानकीविषाल्
आराध्याय बोधयुक्त मुखारो नारेत में व्याप्ता।

- उरा 10.12
रामभुद्र से पुढ़ आते के हथपुल बालकों को वाल्मीकि पुरान रोकर उनका परिष्माण त्री राम से करवाते हैं। तथापि उल्लंघनिता सीता जैं लेकर पुक्त होती है तथा सीता स्वामी राम के पैतृकमाता ने वाता है और दोनों का पुनर्मिलन होता है।

नादयस्य का दृषित से उत्तररामभारत क्रेडि कृत है जिलकी पिठानों ने मुक्तकांत से प्रवीण की है।

व्यापकु ते अन्तर्दि इसमें पावृं अध्यक्षक्तियाँ, ग्रामवासियाँ, सीताध्याय तथा अयोध्येश्वर का प्रदेश ख्यात है।

राम धीरोपतात नायक तथा सीता लविता नायिका है। कन्या पुक्त पात्रों में वाल्मीकि, अनंक, लक्षण, पुष्करेकु तव-युध आदि तथा जी पात्रों में उल्लंघनिता, नीराकार, आदि आदि पृढ़ है।

भव्यूर्ति ने कालिकता के बाहु सीताघर को अनेका नायिका तीता के अन्त: लीतई आ विमुखितित रित्य है।

रस प्रसंग में भव्यूर्ति कुछ रस को ही एकात्र रस गाने है, केवल रस के उनकी दृष्टि में पात्रों के आकाश की तरह है। नादयस्य की दृषित से नाटक का इंग्री रस दृष्मार या वीर होन वाल्मीकि परम्परा है। भव्यूर्ति ने परम्परा से हटकर क्षरल को इंग्री माना है तथा अपने ग्राम्य में ब्रजक तरंगेदी प्रवालित है।

भदनारायण -

भदनारायण प्रशोट पैला देहर नाटक पैलूट बालिका में पीरस्यादान नाटकों
वे अन्यतम माना जाता है। किंतु वाले इस नाटक की कल्पना कृत्ती स्वामी ने, परन्तु नाटककी सी मौलिकता की दृष्टि से मानवपत्र ने इसमें व्याख्याता परिवर्तन भी दिया है। यथाप्राप्त इस नाटक में नाद्यरथ त्रीणि नियमों का पालन निया गया है तथा त्रीणि-कत्ती नियमों का अनुकूलण भी हुआ है। कैसीतर के केवल विशेष रूप में कृत्ती-स्वामी का सम्मान सम्पूर्ण होता है जो वहां स्वामी का महत्त्वपूर्ण काम है। दूसरा प्रय: तथापि आलोचकों ने दूसरी दृष्टि और मानुषी के लोकों के तर्कार के वर्ण को मान लोकनिर्णय माना है तथा के अन्तिम तथ्य में स्वयंत्रता किया है।

भद्दनारायण मुलाय: अपनी कल्पना घोड़ों का कुपहर भुला ना बोले थे, किंतु डिप्लोमा ने अन्य फौजियों के साथ नारायणबार थे जो मानव की स्वामी का के तात्कालिक दिखा था। मुगल तथा शासन का लोगों के लिए, अनुसार आत्मार्थ है। तात्कालिक शासन दो पूर्व के भाषाओं, वाणिज्य व दूरदर्शन ने उनका नामोलैश नहीं रखा है, जबकि वाणिज्य, अनन्दकर्म तथा अर्थशास्त्र ने उदारतापूर्वक कैसीतर नाटक के पांच महीने रखे हैं। भद्दनारायण का लगभग 750 ई. से 800 ई. के बीच माना जा सकता है।

यथाप्राप्त भद्दनारायण के नाम से जोन लोकार्थ दृष्टिगोचर होती है परन्तु अन्य कृत्तियों के सम्बन्ध में प्रमाणों के अभाव में एक कैसीतर नाटक की उपलब्धि होता है। नाटक का नामक्रम भीम द्वारा तृपति के खेलकथा अन्यों की प्रतिबन्ध पर आधारित है। इसके तैयार आर्थिक है और भाषा लोककहास तथा लोकपतिपुर और नाटक का निर्माण भी रचनात्मक है। नाटक की रचना कृत्ती के संपन्न लघु में नसक प्राप्त है। अवरुद्ध तथा दूरदर्शन द्वारा तृपति के खेल घोषणा पर भीम दूरदर्शन का रचनात्मक का प्रतिकार करते हैं। इसी समय युद्ध आर्थिक दृष्टि में माना जाता है तथा दूरदर्शन और मानुषी का कृत्ती-स्वामी का उपलब्धि होता है। तृपति के प्रति अवरुद्ध दृष्टिकोणात तथा बीम वाणिज्य द्वारा दूरदर्शन की मूल को प्रति भूमिका और मानुषी दूरदर्शन को युद्ध आर्थिक दृष्टि करने हेतु
परामर्श देते है लेकिन दमन दूर्योधन उनके उपस्थिति को उजागर जा देता है।

घायल द्वारा भीम और अर्जुन की मृत्यु को बाने के गिनती लड़ने लेकिन कुत्तरा युधिष्ठिर और द्रोपदी ग्राहकों में हुई उदय को बात है लेकिन इतने में ही भीम दूर्योधन ने यह करके होते हैं तथा रत्नरीति हाथों के नौकरों के खल सैनिकों विद्रोध है की बाध्य है।

केशवेन्द्र नाटक के परवर्ती समीक्षकों ने अपने समर्थों में विचार स्थान दिया है। जानकार ग्रंथकार ने तो इतने अनेक पत्र उपलब्ध के लिये दिये हैं।

क्षयवत्र के अन्तःस्तु इसमे पात्रों अंगिकाकृति, काय्यविचार तथा लोकगीत विभाजित है।

इनके नायक के विषय में रिखतों में एक राय नहीं है, एक युधिष्ठिर तथा भीम को नायक पाने हैं तो दूसरे दुर्योधन को। दूर्योधन को नायक पाने से तो यह दुर्भाग्य नाटक होगा जो कि नाट्यनिर्माता के विशेषता है। भीम ही इस नाटक के युद्ध कृत्य दृष्टि के विषय में विद्रोह है, और इस नायक नायक पानी दुर्योधन होगा जो कि धीरोघृत के विशेष में आता है। अन्य पुरब व्यक्ति में कृष्ण, युधिष्ठिर तथा अर्जुन, आदि पाण्ड, भीष्मपतिनाथ, होशं, ब्रह्म, धृतरासु, दूर्योधन तथा उसके भाइयों का यह व्यक्ति विशाल है। को पात्रों में द्रोपदी, भान्तारी तथा अनुसारी प्रमुख हैं।

नाटक का अंतिम दौर है। वेंक तत्पर तथा क्रम आदि पात्र लिपि व में निस्त्राल है न रहे हैं।

भास्कर ग्रंथकार ने हिंदी साहित्य के विषय में भास, जालियास तथा स्वमूर्ति का व्यक्ति
नाटकारों के ल्प में जहां स्वीकृत गुण था, वहाँ अन्य, विशेषता तथा मद्दत
नारायण महान नाटकार हुए हैं । उनके प्राप्ति संबंधूत नायकासहित्य में कोई
मद्दतपूर्ण रणनीति नहीं हुई, जब मुरारि और राजेश्वर दी पिठावत नाटकार
हुए हैं, वे नारायण गुण के प्रतिनिधि के रूप माने जाते हैं । यहाँ अन्य नाटकारों
का सीखना परिष्कार रिक्या अ रहा है ।

मुरारि –
मौदूल्य गौण में उत्सन्नु नारायण देवकृत अविराम हैं ।
मुरारि के समय के फिल्म में निश्चित प्रभाव नहीं मिलता, मद्दत के दो उदाहरण
उन्होंने अपनी वृत्ति में मूल्य दिखाया है तथा 850 ईं में होने वाले रत्नाखल्ने अपने
गृह्य हरिवश में मुरारि का लागू निर्देश रिक्या है, अतः मुरारि इससे पूर्वक्षण
है तथा उनका नाम उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर 800 ईं के लगभग माना जा
लक्षण है ।

अन्तराम मान आकों का नाटक है किसमे महाभारत शिवापन तारा
वाराणसी रामलखण की वार्ता से घोषणा से रामरथार्थ रमण तथा रामायण की
पतने के कारण हैं । अन्य अनुक्रम काव्यक्रम के आधार पर मुरारि ने मूलका के
यत तक कुछ रोग रोकते भी दिखाये हैं । इस नाटक पर गद्यवाचक दी प्रमाण
दृष्टिगोपः होता है ।

श्रीतम्भक –
श्रीतम्भक राधा आक्षरपुपुडामोर्या नामक नाटक केर 1926 ईं में प्रकाश
प्राप्त हुआ । श्रीतम्भक इस प्रथमों के अनुसार शैक्षार्थ के फिल्म थे
जिनका काल 788 ईं से 820 ईं तक है । अतः इनका समय 800 ईं के लगभग हो
सबसा है ।
दांडोदर मिश्र -

दांडोदर मिश्र ने हजुरारनाटक के राजा वाल्मीकि की रचना की थी।
850 ई. में उन्होंने पाले आनन्दकर्म ने अपने पत्र के द्वारा दक्षिणात्य ने हजुरारनाटक के कथित अंग्रेज हरीजंग प्रस्तुत किये थे, जिन्होंने हजुरारनाटक का गाय नौवाँ सदी का आरम्भ मानने में कोई कठिनाई नहीं थी।

हजुरारनाटक का कथित वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। इसमें प्रासंगिक अर्थों नहीं मिलता। आजकल उस महानाटक के दो सैकड़ों सितंबर मिलते हैं, प्राचीन के राज्य का जनसमूह दांडोदर प्रस्तुत नवीन के महाकाव्य नहीं है। दोनों में भाव: बौद्ध तथा नौवाँ शताब्दी पाठ देते हैं।

राजकेशर -

महाराण्य के यात्रावर्षी क्षेत्र में उर्फ राजकेशर आजादल देश के मार्ग, दूरदर्शन शोधकर्ता के पूजा तथा प्राचीन का दोहराना अपनाते हैं। वे ध्यान के यथा प्राप्त हैं तथा से अपने पार्थिव एवं अपने आनन्दकर्म के राजा नरेश के सदियों में रहे। राजकेशर ने 850 ई. में दोनों वाल्मीकि का उल्लेख दिया। व्याख्यात ग्राम पद्म 950 ई. तथा विलकलमार 1000 ईं।

-----------------------------
75 भारतीय भारतवर्ष, तेलुगू नाटक, पृ. 195
में राजवंश की रचनाओं का उलेख पिलता है आँ: उनका सभ्य दसवीं शताब्दी का आरम्भ माना जा सकता है।

बालरामायण के पता चलता है कि राजवंश ने उ: बुद्धिलिखि थे, उनमें से कपुर्वकरी, विज्ञातमविजय, बालरामायण और भारभारत चार नायककृतियाँ हैं। काप्यमोगः अविश्वसनीय एक गुप्त है तथा उन्हें हरेशवर्त नामक महाकवि का उलेख वे तपस्या ने कामयाब नहीं किया है।

कपुर्वकरी चार अंकों का एक पदक है, जिनमें एक प्राकृत अनुभाग का प्रयोग हुआ है। इतने राजा कल्पविल और कुल राजकुमारी कपुर्वकरी अपनी मां की प्रणाम का रोचक वर्ण है। इसका भाषाक रचनात्मक नामिका के समाय है।

विज्ञातमविजय चार अंकों की पहली नामिका है, इसमें तात्त्विक धनरक्षक की राजनीति पूर्व स्मृति तथा समाज पितामह मल की प्रणाम का समाय है। भाषाक कहते हैं कि रोचक है।

बालरामायण यह अंकों का महानाटक है। इस दक्षिण में रामायण के आधार पर रोचक कथन बनाते हुए कथानक को नवोन अत्य ग्रहण कर प्रथम परम्परा से प्रतिकूल पाठियों की लहजानुभूति राजवंश से कथवाया गया है।

भारभारत के वेदक में ही अंक आपसी टोल्ड हुए हैं, जिसका कथानक महाभारत पर आधारित है। इस दक्षिण में द्रौपदिक लक्ष्यवत, वृत्त ढीलता स्वरूपदी धरतीरण की घटनाओं प्रकट है।

केमोयचर -

नेष्टानद तथा अन्य विशेषक्रिया नामक नाटकों के रचनाकार केमोयचर महाराज।
प्रेम-दामक के भाषित कविये । ये राजस्थान के लमकलीन दसवीं शताब्दी के आरम्भ में हुए । नेपालवाद तत्त्व ही ये एक नाटक है, जिसमें महाभारत के क्षणिक पर आधारित तबदियों की प्रस्तावका की प्राचीनता की नाटकीय रूप प्रदान किया है । श्रीरंगविश्व देव के क्षणिक हृदयपद्धति की प्रतिष्ठा सत्यप्रदेश की कथा पर आधारित है।

प्रेम-नाग -

प्रेम-नाग के विषय में पिढ़ियों में मनमोहक है । इस नाम के श्री लालितकारों ने प्रथम जो प्रेमका रूप में मलिनाथ ने जोकाम का लमकलीन स्व दोहा दर्शित दाशिनक माना है । दूसरे प्रेम-नाग का उल्लेख नायिकादल में मिलता है, जिनका रचना कुमारमाला है, जैसे: प्रेम-नाग का सय 1000 ई. के लम्ब गाना जा तकत है । इसके प्रेमका नामक नाटक की क्षणिक वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड पर आधारित है । इसमें राम के राज्याधिकार से लेकर विवाहिता तीता की पृथ्वी द्वारा पाश्चत्य की भोजना करने व उत्तर के राम के पूर्वलिंग तक की कथा दर्शित है । प्रेम-नाग ने भी सत्यार्थ की ही भाषित गृह कथा में पत्रकार के नायिकादलीय तिमाहों के अनुकूल एक सूक्ष्मता नाटक कायम है ।

कृष्णकृष्ण -

प्रेमकेश-नाद्य के संबंधता कृष्णकृष्ण वेशवर्तमान राजा की दिनिका के शासनकाल में विष्णुश ये । इस नाम जा 1098 ई. का लेख प्राप्त होने ते कृष्णकृष्ण का सय 1100 ई. के लम्ब गाना जा तकत है ।

इनकी रचनाप्रेमन्दूर्व के सह सत्यार्थ प्रथना एक्सी की नाटक है, जिसमें प्रेमनतमाल के आत्मवाद विख्यात का रोष देगा ते कृष्ण किया गया है । नाटक ने प्रिया, महिव, प्रिया, नाता आदि अमूर्त भाष्य पदार्थों को विभिन्न रत्नों और
पूर्व पाठों में विशेषत आर्यावतव्यथा ने खुद एवं प्रथम उपदेश दिया है। इस नाटक का अनुकरण करने पर यह उपदेश मिलता है, कि नाटककारों ने यहाँ तक लेकर रहे।

कथादेव -

विदम्भ प्राप्त के क्रुड़कलमग के निवासी तथा प्रस्तुत राजक नाटक के रचनार्थक कथादेव गीतमोरिद्वद के रचयिता कथादेव के सर्वाधिक ख्यात है। इनके पिता का नाम महादेव तथा माता का नाम मुमताज था, उनका समय लगभग 1200 के है।

उनका स्वयं बलक्षण नाटक प्रस्तुत किया है, जिस के लत लबंक है। इसका क्षण रमण्य पर आधारित है, इसमें तीता तत्त्व एवं इसके रामगुण के मुख्य राम के आयोध्या आगमन तक की बांधकाम है। अपने नायकों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न मौलिक परिवर्तन भी किए है। कथादेव की नायकावधुरी तथा अव्यावहित तथा हृदय उत्तरहातीन आलोचकों ने धीर जो सर्व को सविता उसके अनुप्रयोग ही प्रयुक्तव्यथा की उपाधि प्रदान की है।

वहलराज -

काव्यवर्तक अवश्यदेव के नेत्रों वहलराज का समय सन् 1200 के कालिमण है। उन्होंने अंततः नाटकों की रचना की। प्रथम कृष्णवार्त रक्ष इंग का भाषण है, जिसमें पूरा का विशेष अंश है। अपने रोचक अनुशासन लंबाता है।

76. अनिता मोर ग्रंथाय, संक्षेप नाटकार, पृ. 202
दिवाली लघू किरातारुणीय व्यापार है जो तिन क्षेत्रों के प्रतिद लघूकार्य पर आधारित रहनी व्यय है।

तूलीय हाथवर्णमण रहनी पहल है।

पतूरू संविकादित्य महाशापति की क्षी यापर आधारित कार तनों का एक संज्ञान है।

पूर्व किरातमण धरा ईंकन का विविध है, तने फिर धरा तिलुलासुर की

नगरी के खिलाये आ वर्षा क्रिया या है।

सर नमुना है जो तिन तीन नगर का सयवार है। तने देवताओं

और राक्षसों धरा नमुना, सर नमुना से चोदक रहनों का नि:शुल्क के बाद

रिक्रिया और लक्षिय के विवाह इत्यादि की जनार्दन विषय है।

इन अन्यनाट्यकारों के श्रृंखलाक अन्यरिक्षमानवराज विरोधित नामसिप्ताराज

का मायुरजन ने जमातरायंक श्रुति की रचना की थी।

भारती कला भी है उपरोक्त नाट्यकारों के पत्रावृत्ति भी। भारत

के नाटकों लें छठी ही लेकर अन्यक विनेको कार्यक्रम में आने के अर्थ, भारत

के भारती आदि भाषाओं आ प्रशार होने से, अन्य पाण्डों ने तिलक का व्यापक व्यापा

आरम्भ कर दिखा लेकन धराों के नाटकार के भी अङ्क बोटो-बोटी भाषाओं के राजा तिलक कोक्तों के आधार देते है।

बीतन्त हरतों तक कई शोटे छोटे नाटक लिखे आ धूके हैं, जने ने

रामनाथ भास्कर के किरातमण तथा गोप मंकृ, चुभान भार्च का फूल, श्रीकृष्णराज

भाषा इत्यादि नाम उल्लेखनीय है। भारत की रामनाथ भास्कर के आधार पर
निर्मित शैक्षित नाटक, राज्योत्सव और आविष्कार के एकसाथ पर आधारित कास्तुक्तिन का उलेखनीय है।

इस प्रकार संक्षेप में नाट्यकला की क्षुद्र स्थिति का दृष्टि का व्याख्यान है कि आधिक त्य में इस दिशा में अप्रौंभिक पर है। अनेक-प्रकार के दीर्घवर्षीय नाटकों में एक जीव संक्षिप्त नाटकों की रचनाएं दृश्यतापूर्वक होती हैं जिनमें राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक घटनाओं परिपूर्ण होती हैं।

* * * * *

77. यादकल ग्रंथोत्त, संक्षिप्त लेखिका का इतिहास, पृ 701-702.